ISSN Online 3108-026X, ISSN Print 3139-4833
International Multidisciplinary Research Journal Reviews (IMRJR)
A Peer-reviewed journal
Volume 3, Issue 8, August 2026 | DOI 10.17148/IMRJR.2026.030803

मीरा एक दिव्य चरित्र : विरह एवं दासत्व भाव का साहित्यिक अध्ययन

नितिशा कौशल[1], प्रो. (डॉ.) दिग्विजय कुमार शर्मा[2]

हिंदी विभाग, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा[1,2]

सार : भक्तिकाल में मीराबाई एक दिव्य चरित्र की महान संत एवं कवयित्री है और उनके जीवन में गिरधर गोपाल के प्रति उनका विरह एवं दासत्व भाव उनके पदों द्वारा प्रतीत होता है | प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा यह विश्लेषित किया जायेगा की मीराबाई किस प्रकार स्वयं को सांसारिक बन्धनों में न बांधते हुए केवल गिरधर गोपाल के प्रति दासत्व और विरह भाव को चरम सीमा तक ले गईं | बाई सा का गिरधर गोपाल के प्रति आत्मसमर्पण उन्हें एक दिव्य चरित्र के रूप में परिलक्षित करता है एवं सर्व संपन्न कुल में जन्म लेने के पश्चात भी मीरा बाई के भीतर सांसारिक रिश्ते , धन-संपत्ति आदि किसी के प्रति भी कोई लगाव नहीं था वह केवल गिरधर गोपाल के प्रति समर्पित रहीं, देखा जाये तो जीव को भी इस देह को भूल आत्मा का परमात्मा से मिलन करवाने हेतु सांसारिक बन्धनों में स्वयं को इतना लिप्त नहीं करना चाहिए की देह छूटने के विचार से भी मानसिक पीड़ा का आभास हो | बाई सा ने आजीवन अनेको संतो से भेंट की परन्तु कभी न तो किसी संप्रदाय में बंधी और न ही किसी को अपना शिष्य बनाया | उनके अनुसार संसार में कोई भी बंधन चाहे वह संप्रदाय से जुड़ना ही क्यों न हो , बंधन ही है, जो कभी न कभी ईश्वर के प्राप्ति मार्ग में विघ्न ही उत्पन्न करेगा | निष्कर्षतः कहा जा सकता है की दिव्य चरित्र वाली मीरा का विरह एवं दासत्व भाव हिंदी साहित्य को एक अलग ही पहचान देता है |

प्रमुख शब्द: मीराबाई, बाई सा, विरह भाव, दासत्व भाव, गिरधर गोपाल, दिव्य चरित्र, अलौकिक, भौतिकवाद, आत्मसमर्पण, साहित्यिक अध्ययन |

1. प्रस्तावना: भक्तिकालीन संत एवं कवयित्री मीरा बाई भक्ति साहित्य के युग में एक अविस्मर्णीय महिला हैं | मीरा बाई जो कलयुग की राधा के नाम से कुख्यात हैं, गिरधर गोपाल के प्रति उनका विरह भाव, दासत्व भाव, त्याग एवं आत्म समर्पण उनके दिव्य और आलौकिक चरित्र की ओर परिलक्षित करता है | अपने गिरधर गोपाल पर अटूट प्रेम व दृढ विश्वास, संतो का संग, हर पल गिरधर गोपाल को याद करना, चारों ओर भौतिक सुख होने पर भी उनमें लिप्त न होकर एक वैरागन के समान जीवन यापन करना तथा उनकी आध्यात्मिकता एवं पवित्रता से उनकी श्रेष्ठता का आभास उनके दिव्य चरित्र को लक्षित करता है | जिस समय सती प्रथा व विधवा स्त्रियों के लिए अनेको नियम बनाये गये थे और समाज में उनका पालन न करने वालो की दुर्दशा होती थी तथा स्त्रियों पर घर से बहार निकलने पर भी रोक-टोक थी तथा स्त्रियों एवं पुरुषो का समाज में एक साथ उठाना-बैठना लोक लाज खोने के सामान माना जाता था |

"मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
माता छोड़ी पिता छोड़े छोड़े सगा सोई।
साधाँ संग बैठ बैठ लोक लाज खोई॥
संत देख दौड़ि आई, जगत देख रोई|"

(पद संख्या ०२ मीरा काव्य विविधा –डॉ. स्मिता चतुर्वेदी)

ऐसे समय में अपनी संतो के माध्यम से अपनी अध्यात्मिक जिज्ञासा को शांत करना, उनके गिरधर के प्रति दासत्व भाव को पूर्णतः दर्शाता है |

2. अलौकिक एवं दिव्य चरित्र : बाई सा इस संसार की होते हुए भी इस संसार की नहीं थी क्योंकि गिरधर की भक्ति में पूर्णतः हर समय डूबे रहना तथा संसार द्वारा दी जाने वाली प्रताड़ना का उन पर लेश मात्र भी प्रभाव न होना | गिरधर गोपाल को अपना सर्वस्व मान लेना और उनकी लीलाओं में डूबे रहना उनके अलौकिक और दिव्य चरित्र की ओर ध्यान केन्द्रित करता है यह उनके पदों में देखा जा सकता है |

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।

राजकुल में जन्म लेकर भी संतो का सानिध्य प्राप्त करने की टकटकी लगाये रखना इस ओर संकेत करता है की बाई सा एक विलक्षण स्त्री रही हैं , जो चिरकाल तक अविस्मर्णीय रहेंगी |राजवैद्य के मृत शरीर को राग मल्हार द्वारा भगवद गुणगान करना और उस मृतक राज वैद्य को सजीव करना किसी चमत्कार या कह लीजिये की बाई सा की दिव्यता का प्रतिक देता है और उदाबाई को आत्मग्लानी होना और अनुभव करना |

ISSN Online 3108-026X, ISSN Print 3139-4833
International Multidisciplinary Research Journal Reviews (IMRJR)
A Peer-reviewed journal
Volume 3, Issue 8, August 2026 | DOI 10.17148/IMRJR.2026.030803

मैं बौरी अबला रही, डरी किनारे बैठी|
जिन ढूँढा तिन पाइयां, गहिरे पानी पैठी||
प्रेम तो ऐसो चाहिए, जस मजीठ को रंग|
धोये से छूटत नहीं, जाए जिया के संग||
(पृष्ठ संख्या ९१ मीरा सुधा सिन्धु प्रथम भाग)

राणा द्वारा विष देने के पश्चात भी बाई सा का बाल भी बांका न होना तथा सांप का शालिग्राम जी में परिवर्तित होना बाई सा की प्रेमाभक्ति को उनकी आलौकिकता और दिव्यता से जोड़ता है :

मीराँ मगन भई हरि के गुण गाय|
साँप पिटारा राणा भेज्यो, मीराँ हाथ दियो जाय।
न्हाइ धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय|
ज़हर का प्याला राणा भेज्यो, अमृत दीन्ह बनाय।
हाथ धोय जब पीवण लागी, हो गई अमर अँचाय|
सूल-सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाय।
साँझ भई मीराँ सोवण लागी, मानो फूल बिछाय|
मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखे बिघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय|
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली पृष्ट संख्या १००)

3. विरह एवं दासत्व भाव : सेवा भाव अथवा आत्म समर्पण जिसे पूर्ण समर्पण भी कहा जा सकता है ,बाई सा इस कलयुग में उसका एक सटीक उदाहरण प्रस्तुत होती हैं |***"मीरा के प्रभु गिरधर नगर"*** पूर्ण सजीवता से उनके शब्दों और वाणी में दासत्व भाव को प्रदर्शित करता है | इस संसार में कोई भी कार्य बिना संकल्प अथवा दृढ निश्चय किये बिना असंभव है इसीलिए अपनी वाणी को सार्थक करते हुए बाई सा हर एक पद द्वारा स्वयं को गिरधर की दासी घोषित करती रहीं |

श्रीगिरधर आगे नाचूँगी||
नाच नाच पिव रसिक रिझाऊँ प्रेमीजन कूँ जाचूँगी|
प्रेम प्रीत का बाँध घूँघरू सुरत की कछनी काछूंगी||
लोक लाज कुल की मरजादा या में एक न राखूँगी|
पिव के पलंगा जा पौढूँगी मीराँ हरी रँग राचूँगी||
(कल्याण पत्रिका संत वाणी अंक - प्रेम दिवानी मीराँ (निश्चय) पृष्ठ संख्या ३७१)

जब व्यक्ति चिरकाल से किसी की प्रतीक्षा करता है और उसे प्राप्त न होने पर जो वेदना उसके हृदय, मन , बुद्धि , चित्त आदि में होती है उस स्थति में व्यक्ति न चाहते हुए भी अपनी बातों द्वारा उसका संकेत दे ही देता है और यहाँ तो बाई सा के बिन कहे भी उनकी विरह व्यथा का अनुभव हो जाता है | विरह भाव वो भी ईश्वर के लिए - मन, बुद्धि और चित्त को शांत कर अहंकार को नष्ट करता है क्योंकि विरहाग्नि में जलते हुए व्यक्ति की स्थिति का उसे ही बोध होता है और उस समय उस व्यक्ति में अहंकार का कोई स्थान ही नहीं बचता | देवर्षि नारद के भक्ति सूत्र ८२ के अनुसार विरह भाव भी भक्ति साधना का ही एक प्रकार है -

गुणमाहात्म्यासक्ति– रूपासक्ति– पूजासक्ति– दास्यासक्ति–सख्यासक्ति–कान्तासक्ति- वत्सल्यासक्त्यात्मनिवेद्रासक्ति–तन्मयासक्ति– परमविरहासक्ति रूपैकधाप्येकादशधा भवति||

प्रस्तुत भक्ति सूत्र में भक्ति के ११ साधनों में से **परम विरहा भक्ति** एक प्रकार का भक्ति साधन है | दास्य भक्ति ,रूप आसक्ति , वात्सल्य भाव , गुण , महात्मय ,आत्म निवेदन ,तन्मय आदि सभी एक भक्त के लक्षण और भक्ति के साधन स्पष्ट किये गए हैं, और ये लक्षण मीरा बाई में पूर्ण रूप से दिखाई देते हैं |

उज्जवल नीलमणि (श्रील रूप गोस्वामी) के अनुसार भी विरह अर्थात प्रवास-विलंभ की १० दशाये बताई गयी है |

चिंतात्र जागरोद्वेगो तानवं मलिनाङ्गता|
प्रलापो व्यधिरून्मादो मोहो मृत्युर्दशा दश||

इसका उल्लेख मीरा सुधा सिन्धु में भी किया गया है – मीराबाई के पदों में यही विरह व्यथा भिन्न मनोदशाओं को उल्लेखित करती हैं –

चिंता - विरह में उत्कृष्ट पीड़ा और चिंता का भाव जिस कारण मन निरंतर व्याकुल रहता है और हरि दर्शन की तड़प है |

हेरी म्हा तो दरद दिवाँणी म्हाराँ दरद मेरो दरद न जाण्याँ कोय|
घायल री गत घायल जाण्याँ, हियड़ो अगण सँजोय|
जौहर की गत जौहर जाण्याँ, क्या जाण्याँ जिण खोय|

ISSN Online 3108-026X, ISSN Print 3139-4833
International Multidisciplinary Research Journal Reviews (IMRJR)
A Peer-reviewed journal
Volume 3, Issue 8, August 2026 | DOI 10.17148/IMRJR.2026.030803

दरद की माराँ दर दर डोल्याँ, वैद मिल्या णा कोय|
मीराँ री प्रभु पीर मिटाँगा जब वैद साँवरो होय|
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली पद संख्या ७० राग जोगिया)

जागरण तथा उद्वेग – विरह भाव में अनिद्रा की स्थिति अर्थात रात्रि में भी जागरण करना | किसी प्रकार सवेरा हो व प्राण प्यारे का आगमन हो | उद्वेग अर्थात बेचैनी , मानसिक अशांति का होने | यह स्थिति बाई सा की थी , रात भर नींद नहीं आती और यदी आ भी जाये तो स्वप्न में भी गिरधर ही रहते |

नींदड़ी आवाँ णा साराँ रात, कुण विधि होय परभात|
चमक उठा सुपुनाँ लख सजणी, सुध णा भूल्याँ जात|
तल्फाँ तल्फाँ जियराँ जायाँ कब मिलियाँ दीनानाथ|
भवाँ बावरा सुध बुध भूलाँ पीव जाण्या म्हारी बात|
मीराँ पीड़ा सोई जाणे, मरण जीवण जिण हाथ|
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली पद- ७५, पृष्ठ संख्या- १२२)

तानवं- विरहाग्नि में व्यक्ति इस प्रकार जलता है की शरीर से भी दुबला हो जाता है, क्योंकि भोजन तक की सुध नहीं रहती | बाई सा भी इस अग्नि में जल कर शरीर से दुर्बल हो गई थी |

जोगियाजी निसदिन जोवाँ थारी बाट|
पाँव न चालै पंथ दुहेलो, आढा औघट घाट|
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीति न पाइ|
मैं भोली भोलापन कीन्हों राख्यौ नहिं बिलमाइ|
जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीता,अजहूँ आयो नाहिं|
विरह बुझावण अंतरि आवो, तपन लगी तन माहिं|
कै तो जोगी जग माँ नाहीं कैर बिसारी मोइ|
काँइ करूँ कित जाऊँरी सजनी नैण गुमायों रोइ|
आरती तेरी अंतरि मेरे, आलो अपनी जाण |
मीराँ व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणी|
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली पद संख्या ४४)

मलिनाङ्गता – एक ऐसी स्थिति जब व्यक्ति को देहभान नहीं रहता और वह कांतिहीन तथा निस्तेज हो जाता है क्योंकि अपने प्रियतम के न होने पर अपने तन पर ध्यान नहीं रहता और मन मलिन हो जाता है|

मैं जाण्यो नाहीं प्रभु को मिलण कैसे होय री ||
आये मेरे सजना फिर गये अंगना| मैं अभागण रही सोय||
फारूँगी चीर करूँ गळ कंथा| रहूँगी बैरागण होय री||
चुडियाँ फोरु माँग बखेरूँ| कजरा मैं डारूँ धोय री||
निस वासर मोहि विरह सतावै| कल न परत पळ मोय री||
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी| मिल बिछड़ो मत कोय री||
(मीराँ सुधा सिन्धु –विरह के पद –पृष्ठ १८९ ,पद संख्या ६८)

प्रलाप – प्रियतम के विरह में मानसिक पीड़ा के कारण वाणी पर संयम न रहना और कुछ भी बिना सोचे समझे कह देना , दिन-रात रुदन करना- यही विरह प्रलाप कहलाता है |

तुम हो मेरे प्राण जी, कासूं जीवन होय||
धान न भावै नींद न आवै, विरह सतावै मोय||
घायल– सी घूमत फिरूँ, मेरा दरद न जाणे कोय||
दिवस तो खाय गमाइयो रै,रैण गमाई सोय|
प्राण गमायो झूरता रै, नैण गमाया रोय||
जो मैं ऐसा जानती रै, प्रीत किये दुःख होय|
नगर ढिंढोरा फेरती रै, प्रीत करो मत कोय||
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, ऊभी मारग जोय|
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय||

ISSN Online 3108-026X, ISSN Print 3139-4833
International Multidisciplinary Research Journal Reviews (IMRJR)
A Peer-reviewed journal
Volume 3, Issue 8, August 2026 | DOI 10.17148/IMRJR.2026.030803

(मीरा काव्य विविधा –पद संख्या १२)

व्याधि – विरहभाव की एक ऐसी स्थिति जब विरह में शरीर से रोगी हो जाना क्योंकि जब नींद उड़ जाये तथा भूख न लगे ऐसी स्थिति में स्वस्थ व्यक्ति भी निद्रा और भोजन के आभाव से रोगी हो जाता है |

***नाड़िय न जाणै बैद निपट अनारी है*||**
***बूंटी तो सब झूँठी लायो औषध पिसारी है*|**
***तूँ थारे घर जा रे बैद म्हारे रोग भारी है*||**
***कुबजा ने प्यारी किधी, राधिका बिसारी है*|**
***कंस की जो चेरी वो तो, महल पधारी है*||**
***पानां जैसी पीरी पीरी, पलंगा पे डारी है*|**
***मीराँ ने तो दर्शन दीजो, दासी ये तुम्हारी है*||**
(मीरा सुधा सिन्धु –ब्रजभाव के पद –संख्या ४६)

उन्माद- एक ऐसी दशा जिसमें समर्पण भाव इतना अधिक हो जाये की अपनी सुध बुध खो अपने प्रियतम को याद कर उसी में विलीन हो जाना और उनसे साक्षात्कार होने का एहसास होना | यह अलौकिक प्रेम का रूप है |

***गिरधर आवणाँ हे, ऊदाँ बाई सेजड़ली सँवार*|**
***आवणा री बिरियाँ भई जी, अब महलाँ ढोल्यो ढार*|**
***अतर सुगंध मिलायके जी, घी भर दिवला बार*|**
***जाई जूही केतकी जी, चम्पाकली सुधार*|**
***पलकाँ सूँ करा पाँवड़ा जी, अँचला सू मग झार*|**
***गिरधर म्हारो परम स्नेही, मीराँ उनकी नार*|**
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली पद संख्या २३२)

मोह (मूर्छा) – विरह के आवेश में आकर शरीर में शिथिलता आ जाना अर्थात मूर्छा प्रतीत होना | अपने गिरधर गोपाल की तड़प में मीराबाई का शरीर भी शिथिल पड़ गया था |

***सखी म्यारी नींद नसाणी हो*|**
***पिय रो पंथ निहारता सब रैण विहाणी हो*|**
***सखियन सब मिल सीख दयाँ मण एक णा मानी हो*|**
***बिन देख्याँ कल ना पड़ाँ मन रोस णा ठानी हो*|**
***अंग खीण व्याकुल भयाँ मुख पिय पिय वाणी हो*|**
***अंतर वेदन विरह री म्हारी पीड णा जाणी हो*|**
***ज्यूँ चातक घणकूं रटै मछरी ज्यूँ पाणी हो*|**
***मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसराणी हो*|**
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली पद संख्या ८६)

मृत्यु – विरह वेदना की एक ऐसी स्थति जहाँ बाई सा प्रियतम के इंतजार में पल-क्षण तड़पती हुई अपने गिरधर के आगमन की बाट देखते-देखते असहनीय कष्ट झेलती हुई अपनी मृत्यु को गले से लगाने को तैयार थी |

***ऐसी लगन लगाई कहाँ तू जासी*|**
***तुम देख्याँ बिन कल न पडत है, तलफ तलफ जिव जासी*|**
***तेरे खातिर जोगन हूंगी, करवत लूंगी कासी*|**
***मीराँ के प्रभु गिरधर नगर, चरण कँवल की दासी*|**
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली पद संख्या ४९)

निष्कर्षतः मीरा का पूर्ण समर्पण उनके दासत्व भाव की झलक देता है | विरह आवेश में आकर गाना , नृत्य करना , उनकी मूरत से बातें करना , उन्माद की स्थति में आ जाना | हर वस्तु ,हर व्यक्ति हर भाव में केवल उन्ही के दर्शन होना यह सभी एक सर्वस्व समर्पित भक्त के ही लक्षण है जो उनके दासत्व भाव को पूर्ण रूप से प्रमाणित करते हैं |

4. निष्कर्ष : निष्कर्षतः कहा जा सकता है की मीरा बाई का दिव्य चरित्र पहले भी जन कल्याण हेतु था , आज भी है और चिरकाल तक इसका प्रभाव देखने को मिलता रहेगा | मीरा स्वयं में ही एक परिपूर्ण कृष्ण आराधक भक्त कवयित्री है जिन्होंने इस कलिकाल में जन्म लेकर इस पवित्र भारतभूमि का नाम रौशन किया | कृष्ण भक्ति के माध्यम से उन्होंने एक ऐसी अमिट छाप प्रस्तुत की जिसे चाह कर भी मिटाया न जा सका | मीरा का दासत्व भाव और पूर्ण समर्पण भाव हमें यह सीख देता है यदि व्यक्ति किसी भी

विषय को लेकर समर्पित हो जाए तो उसे उसकी प्राप्ति हो ही जाती है जिस प्रकार हर पल बाई सा कृष्ण विरह में रहती थी ,उनकी एक झलक की दर्शन अभिलाषी थी तो उन्हें पाने के लिए सब सुध-बुध गवांकर अंततः उनमें एकाकार हो गई |

बाई सा ने भक्ति के माध्यम द्वारा अपनी वाणी लोक जन तक पहुंचाई और सभी के लिए मार्ग प्रशस्त किया | गिरधर गोपाल की मीरा कोई सामान्य भक्त कवयित्री ही नहीं समाज के लिए एक ऐसी मिसाल है जो जन कल्याण के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहते है | एक वास्तविक भक्त के आचरण मीरा में पूर्ण रूप से दिखाई देते है क्योंकि ईश्वर प्राप्ति मार्ग में कुछ भी अड़चन उन्हें स्वीकार्य नहीं थी और उसका उन्होंने पुरजोर विरोध कर अपने गंतव्य तक पहुचने के लिए भिन्न प्रकार की यातनाओं का डटकर सामना किया|

राणोजी थें जहर दियो म्हें जाणी|
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराँवाणी|
लोकलाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी|
अपने घर का परदा करले, मैं अबला बौराणी|
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी|
सब संतन पर तन मन वारों, चरण कँवल लपटाणी|
मीरा को प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी|
(मीराँ बाई की सम्पूर्ण पदावली , पद संख्या ३८)

कुल मिलाकर मीरा भक्ति मार्ग में अपने दासत्व एवं विरह भाव रखते हुए एक दिव्य चरित्र की पात्रता में खरी उतरती हैं और अंततः हम कह सकते है बाई सा ने स्त्री समाज के लिए एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसे चाह कर भी कोई नकार नहीं सकता|

संदर्भ सूची

१. IGNOU-MHD २१ मीरा का विशेष अध्ययन - मीरा काव्य विविधा :
संकलन एवं संपादन डॉ. स्मिता चतुर्वेदी
मुद्रण निर्माण : श्री सी . एन . पाण्डेय –अनुभाग अधिकारी मानविकी विद्यापीठ , इग्नू ,मैदान गढ़ी , नई दिल्ली
जून २०२२ © इंदिरा गाँधी राष्ट्रिय मुक्त विश्वविद्यालय, २०१४ :
ISBN :९७८-८१-२६६-६८२२-९
पद संख्या ०२,पद संख्या १२
२. मीरा सुधा सिन्धु प्रथम भाग द्वितीय संशोधित संस्करण २०१८:
(चीफ एडिटर -स्वामी आनंद स्वरुप) (एडिटर-स्वामी (डॉ.) ॐ आनंद सरस्वति एंड प्रोफेसर सत्य नारायण समदानी)
(प्रकाशक- मीरा स्मृति संसथान, चित्तोडगढ़ (राजस्थान) एवं राजस्थानी ग्रंथागार ,जोधपुर) ISBN :९७८-९३-८७२९७-००-५
मीराबाई की जीवनी पृष्ठ संख्या ९१ ,पृष्ठ संख्या १८९ – पद संख्या ६८,पृष्ठ संख्या ५०७-पद संख्या ४६
३. कल्याण पत्रिका संत वाणी अंक -प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर
वर्ष २९ संख्या १ पूर्ण संख्या ३३८ गोरखपुर ,सौर माघ २०११, जनवरी १९५५
प्रेम दिवानी मीराँ (निश्चय)पृष्ठ संख्या ३७१
४. नारद भक्तिसूत्र
चौखम्बा सुभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण २०१४
पृष्ठ संख्या ५२ भक्ति सूत्र श्लोक ८२
५. श्रीलरूपगोस्वामिना प्रणितः उज्जवलनीलमणि:
प्रकाशक : श्री भक्तिवेदांत तीर्थ महाराज
प्रथम संस्करण : ५००० प्रतियाँ ,श्री गोवर्धन- पूजा और अन्नकूट महोत्सव
श्री चैतन्याब्द ५२० , २३ अक्टूबर , २००६
पृष्ठ संख्या १०२ , अध्याय १५ ,श्लोक संख्या १६७
६. मीराबाई की संपूर्ण पदावली (आलोचना एवं टीका सहित):
संपादक डॉ. रामकिशोर शर्मा प्रोफेसर (पूर्व अध्यक्ष) हिंदी विभाग, इलाहबद्द विश्विद्यालय ,इलाहबाद एवं डॉ . सुजीत कुमार शर्मा अध्यक्ष, हिंदी विभाग बेनीमाधव सिंह डिग्री कॉलेज विगाहिया , इलाहबाद चतुर्थ संस्करण २०२२
ISBN – ९७८-८१-८०३१-७७४-3 ,लोकभारत प्रकाशन - पृष्ठ संख्या -१०० , पृष्ठ संख्या -११८ , पद संख्या ७०, पद संख्या ७५ , पद संख्या २३२ , पद संख्या ८६, पद संख्या ४९, पद संख्या ३८